सोमनाथ होरः एक संवेदनशील कलाकार (संक्षिप्त विवेचन)

डॉ. पूनम लता सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, (चित्रकला विभाग)
रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मेरठ
ईमेलः*poonamlatasingh @gmail.com*

डॉ. नाजिमा इरफान
असिस्टेंट प्रोफेसर, (चित्रकला विभाग)
रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मेरठ
ईमेलः*drnazimairfan@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 30-11-25
Approved: 08-12-25

डॉ. पूनम लता सिंह
डॉ. नाजिमा इरफान

सोमनाथ होरः एक संवेदनशील कलाकार (संक्षिप्त विवेचन)

Artistic Narration 2025,
Vol. XVI, No. 2,
Article No.27 Pg.188-197

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-dec-2025-vol-xvi-no2

Referred by:
DOI:*https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i02.027*

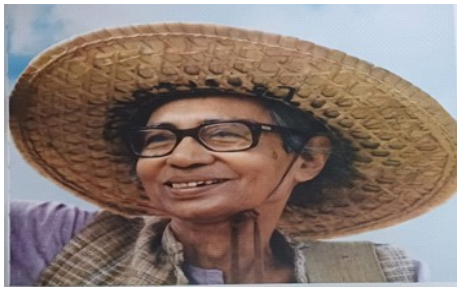

सारांश

भारतीय समकालीन कला में सोमनाथ होर का नाम अग्रणी छापाकार, मूर्तिकार व एक अति संवदेनशील कलाकार के रूप में लिया जाता है। होर ने कला का सृजन मानवीय संवेदनाओं को सामने रखकर पीड़ा व संताप को प्रदर्शित करने के लिये किया, उनकी कला कभी बाजार व अर्थलाभ के लिये नहीं बनी उन्होंने आत्मसंतुष्टि और समाज के घिनौने कृत्यों को उद्घाटित करने के लिये ही अपना कला संसार रचा। होर ने ग्राफिक कला की लगभग सभी विधियों में काम करते हुए पेपर पल्प की अनोखी विधा विकसित की और घाव व वुन्ड्स जैसी अद्भुत रचनावली का सृजन किया। होर की कला का प्रारम्भ कम्युनिस्ट पार्टी के लिये पोस्टर, स्लोगन सृजित करने से हुआ और सदैव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से वो आजीवन उसके साथ रहे। होर की कलायात्रा का अध्ययन करके यह समझ आता है कि वह सच्चे अर्थ में एक ऐसे कलाकार थे जो केवल अपनी कला के लिये अपनी शर्तों पर ही जिये। होर ने अपने प्रांत में रहकर एक ऐसे कला संसार का सृजन किया जो आने वाली पीढ़ियों के लिये सदैव प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

मुख्य शब्द

वुन्ड्स, रामचिरैया, तेभागा, पेपर पल्प, विस्कोसिटी, दुर्भिक्ष, बाउल

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i02.027

प्रस्तावना

कला माध्यम है आत्मअभिव्यक्ति का, अपने अंतस में उमड़ती घुमड़ती भावनाओं के उद्‌गार का तथा अपने चेतन अचेतन मन–मस्तिष्क में संचित भावनात्मक सैलाब के प्रस्फुटीकरण का। कला की अभिव्यक्ति व्यक्ति और समाज की आशाओं, आकांक्षाओं और कल्पनाओं का एक सजीव प्रतिबिम्ब है। वस्तुतः संस्कृतियों ने कला के अंक में जन्म लेकर कला का पोषण किया है। जहाँ व्यक्ति तथा उसके द्वारा निर्मित समाज को सुसंस्कृत बनाने में कलाओं का विशेष योगदान है,[1] वहीं मन पर पड़े प्रभाव कलाकार की अभिव्यक्ति को आन्दोलित करके समकालीन परिवेश का प्रकटीकरण करते हैं। कलाकार चाहे किसी भी देशकाल के रहे हों उनका व्यक्तित्व और कृतित्व उनके परिवेश से सदैव प्रभावित होता रहा है उनकी कला उसकी द्योतक अपने आप बन जाती है तथा सदैव उनकी कलाकृतियों में मुखरित होती रहती है।

चालीस के दशक की राजनैतिक उथल पुथल ने कला में सदियों से उस वर्जित वर्ग को कला में प्रतिष्ठित किया जिसकी कल्पना भारतीय चित्रकला में पहले नहीं की गई थी।[2] भारत की स्वतंत्रता के साथ कई नये अध्याय भारत के इतिहास में जुड़े, जिसमें सबसे अधिक दुर्दान्त भारत विभाजन रहा था जिसने राजनैतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक तीनों ही यंत्रों को बड़ी गहनता से प्रभावित किया था। तत्कालीन कलाकार हो या साहित्यकार सभी की कृतियाँ उस त्रासदी से कभी मुक्त न हो सकीं। कलाकारों ने अपनी कृतियों में उस दुख व क्षोभ को अंकित किया है। अपनी कला में विभाजन के कष्ट, बंगाल के अकाल भूख प्यास बीमारी से त्रस्त जनता जनार्दन का अंकन करने वाले सोमनाथ होर अपनी कला को तत्कालीन समाज का दर्पण बनाकर प्रस्तुत करते हैं, वे स्वयं भी अपनी कला के विषय में कहते हैं कि ''मैं क्या चित्रित करूँ? मेरी खुद की अभिव्यक्ति एक अवधारणा – घाव के आसपास घूमना है मेरे द्वारा देखे गए सभी घाव और जख्म मेरी चेतना पर उत्कीर्ण हैं। सोमनाथ होर की अभिव्यक्ति में जीवित अनुभव के आघात व दुखों का प्रतिबिम्ब है।

सोमनाथ होर का प्रारंभिक जीवन

विभाजन के पूर्व जन्मे कलाकारों में श्री सोमनाथ होर एक अति संवेदनशील कलाकार माने जाते हैं, जिनका हृदय उनकी समकालीन त्रासदियों से सदैव विच्छेदित रहा और ताउम्र उनकी कला में इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता रहा उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति उस सत्य का स्वरूप है जो उन्होंने अपने बचपन से ही देखा और महसूस किया। 13 वर्ष की आयु में पिता का साया उनके सिर से उठ गया था, परिवार में राजनैतिक जुड़ाव था उनकी माताजी कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़ी हुईं थीं तथा उनकी बहन भी पार्टी के कामों में उनकी सहायता करती थी। बाल्यकाल से ही उनके मन पर ये प्रभाव गहरे होते चले गये। सोमनाथ होर का जन्म बरामा गाँव चटगाँव में हुआ था। उस समय वह भारत का हिस्सा था जो विभाजन के पश्चात् बांग्लादेश में चला गया। पिता का साया उठने के पश्चात् उनकी शिक्षा का दायित्व उनके चाचा पर आ गया और उन्होंने ही उनकी शिक्षा दीक्षा कराई। सर्वप्रथम उनके गाँव के ही स्कूल में पहली कक्षा में उनका दाखिला हुआ जहाँ उनके प्रथम गुरू देवेन्द्र मजूमदार थे जिनकी कक्षा में वे पूर्ण मनोयोग से कला सीखते थे और सीधी मुड़ी रेखाओं के अंकन में अत्यन्त सुख की अनुभूति करते थे यहीं से उनका कलानुराग आरंभ हुआ। उनके चाचा साइलेन उनकी कला प्रतिभा से बहुत प्रभावित थे उन्होंने उनको एक जलरंग बॉक्स खरीदकर दिया, और उसके पश्चात् सोमनाथ ने फूल पत्ती, फल, चिड़िया की नकल करना प्रारंभ किया और उनके बालमन में कला के प्रति प्रेम आसक्ति के बीज स्वतः ही रोपे गये। रामचिरैया (Kingfisher) उनकी पसंदीदा

चिड़िया थी। जिसका अंकन उन्हें अतिप्रिय था वे जब थोड़े बड़े हुए तो प्रतिष्ठित कलाकारों के चित्र देखकर बहुत अचंभित होते थे। उनके गाँव के शवदाह में अंकित राजा हरिश्चन्द्र की कथा के चित्रों को देखने को यदा कदा जाते रहते थे, उन्हें बाल्यकाल में लगता था कि किसी चित्र को देखकर उसकी अनुकृति करना तो सरल है परन्तु अपनी कल्पना से कोई आकार अंकित करना नितान्त अद्भुत कार्य है इस प्रकार के विचारों से उनका बालमन ओतप्रोत रहता था। 1940–41 में सोमनाथ होर ने सिटी कॉलिज में दाखिला लिया और वहाँ से वह सीधे कम्युनिस्ट पार्टी के संपर्क में आ गए। अपनी सुन्दर सुस्पष्ट लिखाई के कारण वह पार्टी के लिये पोस्टर बनाते थे जो बाजारों, मन्दिरों की दीवारों पर पार्टी कार्यकर्ताओं द्वारा चिपका दिये जाते थे। धीरे–धीरे उनके कुछ चित्र पीपुल्स वॉर पार्टी की साप्ताहिक पत्रिका में भी छपे और पार्टी के साथ उनका अगाध जुड़ाव हो गया, उन्होंने पार्टी की सदस्यता भी ली और अपने निजी कारणों से 1956 के बाद वो बेशक पार्टी के आधिकारिक सदस्य नहीं रहे सके परन्तु उनका मोह कभी उससे भंग नहीं हो पाया। पार्टी के सचिव पी0सी0 जोशी के ही सतत् प्रयासों से उन्हें गवर्मेन्ट कॉलिज ऑफ आर्ट, कलकत्ता में दाखिला मिला और यहीं उनकी वास्तविक कला शिक्षा हुई जहाँ उन्हें ग्राफिक विभाग के अध्यक्ष हरेन दास का सान्निध्य मिला और सैफुद्दीन अहमद उनके गुरू रहे। सोमनाथ होर जैनुअल आबदीन के भी संपर्क में आए। उस समय के सबसे प्रभावशाली और राजनैतिक कलाकार श्री चित्ता प्रसाद भी उनकी प्रेरणा का स्रोत रहे। सड़क किनारे बैठे हुए लोग, अस्पताल में पीड़ा से कराहते द्रवित लोगों का अंकन किस प्रकार किया जाये यह होर ने चित्ता प्रसाद से ही सीखा, जिसने उनकी कला यात्रा में बहुत ही विचारणीय भूमिका का निर्वहन किया।

कलाकार के रूप में होर की जीवन यात्रा

सोमनाथ होर के व्यक्तित्व का विकास एक कम्युनिस्ट के रूप में हुआ था उनकी कला पर भी इसका प्रभाव पड़ता ही रहा था वो जानते थे कि अर्थ के बिना कलाकृति किसी घटना या वस्तु से अधिक नहीं है जिसका अभिप्रायविहीन वर्णन सूक्ष्म से सूक्ष्म वर्णन के साथ किया जाता है,[3] तो विषयपरकता समाप्त हो जाती है। उन्होंने विषय की गूढ़ता को बारीकी से समझा और अंततोगत्वा कला को अपने जीवन यापन के लिये चुना। उन्होंने 1954 में श्री अतुल बोस जो आर्ट कॉलिज में उनके गुरू भी रहे थे उनके कहने पर 95 रूपये प्रतिमाह पर अपनी पहली नौकरी इण्डियन आर्ट स्कूल से प्रारंभ की। 1954 में उसके पश्चात् वह दिल्ली आ गए और वहाँ कार्य करते रहे। 1958 में उन्हें ग्राफिक डिवीजन का प्रमुख भी नियुक्त किया गया उस समय यहाँ आर्ट डिपार्टमेन्ट ऑफ पॉलिटैक्निक था जो कालान्तर में Delhi College of Art में तब्दील होकर तिलक मार्ग पर स्वतंत्र अस्तित्व में आया।

दिल्ली आकर सोमनाथ होर को भावेश सान्याल, दिनकर कौशिक, शैलोज मुखर्जी, धनराज भगत, बिरेन डे तथा जया अप्पास्वामी आदि का सानिध्य प्राप्त हुआ, उन्होंने काफी लंबे समय तक लगभग 9 वर्ष तक दिल्ली में कार्य किया। ग्राफिक विभाग के प्रमुख के रूप में भी उन्होंने कार्य किया साथ ही वह बीच–बीच में एम0एस0 कॉलिज, बड़ौदा के प्रतिष्ठित कला विभाग में अतिथि आचार्य बनकर काम करते रहे।

दिल्ली की चकाचौंध वहाँ का दिखावटीपन होर जैसे सन्त प्रवृत्ति के कलाकार को कभी भाया ही नहीं, परन्तु उनके दिल्ली प्रवास ने उन्हें चित्रण की नई विधाएँ, नई तकनीक तथा नवीन सामग्री प्राप्त कराई और उन्होंने यह जाना कि कोई भी शैलीगत प्रयोग, उनका सौन्दर्य अलंकरण कलाकृति में वांछित भावनात्मक संवेग उत्पन्न करने के लिये पर्याप्त नहीं हो सकता इसके लिये अपने बोध ज्ञान से परे जाना अत्यन्त आवष्यक है।

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i02.027

सोमनाथ होर 1969 में शान्ति निकेतन आ गए और वहाँ पर उनका मन रम गया और वहाँ वे विश्वभारती विश्वविद्यालय के कला भवन से जुड़ गए। यहाँ पर दिल्ली की भागदौड़ के स्थान पर एक प्रकार की शांति और ठहराव था जो कलाकार हृदय को भावनाओं से भर देता था यूँ तो समस्त कला जगत में सोमनाथ होर एक छापाकलाकार प्रिंट मेकर के रूप में जाने जाते हैं परन्तु शान्ति निकेतन में मिले रामकिंकर बैज जैसे श्रेष्ठ मूर्तिकार के साथ ने उनके मन में मूर्तिकला के प्रति भी एक आसक्ति जागृत कर दी थी जिसका प्रतिफल हम आगे उनकी मूर्तिकला में देखते हैं।

लाल बांध, शांतिनिकेतन स्थित होर के स्टूडियो के कुछ दृश्य

शांतिनिकेतन में प्रयोग करते हुए सोमनाथ होर

सोमनाथ होर की कला

के0जी0 सुब्रहमण्यन ने सोमनाथ होर पर एक संक्षिप्त टिप्पणी में लिखा था कि चमकदार आंखों वाले दुबले पतले सोमनाथ शान्ति निकेतन में हमेशा कहीं न कहीं जाने की हड़बड़ी में दिखाई देते है ऐसा लगता है कि वह कहीं मिशन पर जा रहे हैं और उनकी कला में एक मिशनरी फोकस है[4] सोमनाथ होर की अध्ययन करने पर मैं जब उनकी कला को इस कथन के परिप्रेक्ष्य में देखती समझती हूँ तो मुझे लगता है कि सोमनाथ होर अपनी पूरी कलायात्रा में एक मिशन पर ही तो रहे थे जिसमें उनका मिशन था पीड़ा, अवसाद से घिरे हुए लोगों की संवेदनाओं और दर्द से पीले पड़े शून्य आंखों वाले चेहरे मोहरे वाली आकृतियों का अंकन यही उनके लिये सच्चाई का अंतिम खजाना था।

सोमनाथ होर के मन में बचपन से ही कला के प्रति रुचि थी बड़े होकर जब वह कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य व कार्यकर्ता बने तब उन्होंने अपनी कला यात्रा पार्टी के लिये पोस्टर बनाने से प्रारंभ की और सशक्त रेखांकन और सुन्दर लिखाई से अपना स्थान बनाया। 1950 के दशक में होर ने वुडकट्स, लिनोकट और लकड़ी के उत्कीर्णकों के साथ प्रयोग किया। रोजमर्रा की जिंदगी से विषय लेते हुए जैसे चाय की दुकान का दृश्य, उन्होंने लकड़ी की खुरदरी बनावट को छवि में एकीकृत करने का प्रयास किया, अधिक टोनलिटी

की खोज में इन्ग्रेविंग के साथ प्रयोगों को जन्म दिया वुडकट के अतिरिक्त मोनोक्रोम इन्ग्रेविंग और ड्राई पांइट्स से ऐसी रेखाएँ बनाईं जो अधिक मुक्त, नरम और घुमावदार थीं और ऐसी आकृतियाँ जो आसानी से पहचानी जा सकती हैं।[5] उन्होंने वुडकट् और वुड इन्ग्रेविंग दोनों के विभेद को समझ कर उसमें कार्य किया (चित्र सं0 3 व 4) उसके पश्चात् वह ड्राइपाइन्ट की ओर आकर्षित हुए यह वह माध्यम था जिसमें गोया व रैम्बा जैसे नामचीन कलाकारों ने अपनी सफलतम कृतियाँ सृजित की थीं। सोमनाथ होर ने इसमें भी प्रयोग कर अपनी रचनात्मकता का परिचय दिया।

वुडकट

वुड इंग्रेविंग

सोमनाथ होर 1958 में दिल्ली आए थे तब यहाँ आकर उन्होंने छापाकला पर अपना पूर्ण ध्यान केन्द्रित कर दिया तथा ग्राफिक कला की विधियों को न केवल सीखा वरन् उसमें सतत् प्रयोग करके इनको और बेहतर व नये स्वरूप में प्रस्तुत किया, यह वही समय था जब उन्होंने प्रिंट मेकिंग को अतिगंभीरता से लेना प्रारंभ किया था और उनके साथी उन्हें अग्रणी कलाकार के रूप में देखने लगे थे।

दिल्ली में रहकर ही उन्होंने सर्वप्रथम कृष्ण रेड्डी की प्रदर्शनी में विस्कोसिटी माध्यम में बनी कृतियाँ देखीं जो कि रंगीन इंग्रेविंग प्लेट से छपी थीं। यह भारतीय कलाकारों के लिये एक बिल्कुल नया माध्यम था और बहुत कम ही कलाकार रहे जिन्होंने सफलतापूर्वक इस विधि का प्रयोग किया। होर के लिये यह न सिर्फ एक प्रेरणा ही बनी अपितु उन्होंने उसे एक चुनौती के रूप में स्वीकर कर उसका अध्ययन किया और एक वर्ष से भी कम अन्तराल में उन्होंने इस विधि का अध्ययन तथा प्रयोग करके सफलतापूर्वक कार्य किया उन्होंने एक ही मैट्रिक्स में बहुरंगी इंग्रेविंग करना सीखा और उसे बेहतर बनाया। 1964 के आसपास तक यह उनकी अभिव्यक्ति का मुख्य साधन बना। अम्ल से खेलते–खेलते वो अनगिनत अम्लांकन बनाते गए साथ ही उन्होंने सौफ्ट ग्राउण्ड पर भी अम्लांकन के प्रयोग किये। उन्होंने लिथोग्राफी और इंटैग्लियों में भी काम किया। अपने दिल्ली प्रवास से वो जो भी सीखकर आए थे उसका मुक्तहस्त प्रयोग उन्होंने वापस कलकत्ता लौटकर किया। वे 1969 में शान्ति निकेतन का हिस्सा बने और उन्होंने टैगोर बन्धुओं की कला को एक नये दृष्टिकोण से देखा और वहाँ के ग्राफिक विभाग में अपना कार्य प्रारंभ किया और फिर आजीवन वह कलकत्ता में ही रहे। साठ

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i02.027

के दशक में उन्होंने चित्रों में बारीकियों को जोड़ने के लिये इंटैग्लियो प्रिंटिंग की प्रक्रिया को प्रस्तुत किया। साठ के दशक के मध्य तक उन्होंने रंगों को छोड़ना प्रारंभ कर दिया था उन्होंने प्लेट को और गहराई से काटकर और सबसे गहरे गढ्ढों में रंग ना डालकर सफेद रंग से काम करना आरंभ कर दिया था।

साठ के अंतिम दशक से सत्तर के दशक का प्रारंभ उनकी कला में विरोधाभास उत्पन्न करता है उन्होंने आकृतिमूलकता को त्याग कर अमूर्तता की ओर अपना रुख किया जैसे उनकी कृतियों में मानवाकृति वेदना व्यक्त करती थी वही उनके अमूर्त कला का भी लक्ष्य रहा।

नई तकनीकें अक्सर नए अर्थों को उजागर करती हैं, और होर को पता चल गया होगा कि धातु की प्लेटों को खोदना भी अपने आप में हिंसा का कार्य था इस सरल विचार के परिणामस्वरुप 70 के दशक में प्रिंटों का एक महत्वपूर्ण समूह सामने आया[6] जिसमें सोमनाथ होर ने सीमेन्ट और प्लास्तर ब्लॉक तथा कागज की लुगदी के साथ परीक्षण किये इसके लिये वह समतल सतह की एक इंच मोटी मिट्टी की पटिया रखते थे अनेक उपकरणों से उस पटिया की समतल सतह पर जिस प्रकार खेत में हल चलाते हैं इसी प्रकार उस पर चित्रांकन उकेरा जाता था, इस प्रकार बनी समतल सतह पर सीमेन्ट के घोल द्वारा उसका साँचा बनाया जाता था और कच्चे पेपर की लुग्दी बना दी जाती थी। इस प्रयोग में उन्होंने पाया कि जो परिणाम चाहिये उसे पेपर पल्प के छापे से प्राप्त कर सकते हैं। होर के इन अपारम्परिक पल्प छापों की प्रथम प्रदर्शनी सन् 1973 में दिल्ली में आयोजित की गई तथा इन्हें वुन्ड्स या घाव कहा गया।[7] यह उनके सफेद पर सफेद प्रिंट थे जो पूर्णरूप से अमूर्त होकर भी सफलता से भाव अभिव्यंजना करते हैं उन्हें इस प्रकार बनाया था जिसमें कहीं कटे का निशान, कहीं जली हुई खाल के फफोले, चोट लगने जैसे त्वचा के निशान परिलक्षित होते हैं और होर की पीड़ा को सफलता से अभिव्यक्त करते हैं।

घाव शृंखला पेपर पल्प

घाव शृंखला पेपर पल्प

सोमनाथ होर को शांतिनिकेतन आकर रामकिंकर बैज का सान्निध्य मिला जिसने उनके मन में मूर्तिकला के प्रति एक आसक्ति उत्पन्न हुई उन्होने कांस्य मूर्तिशिल्प को ढालने के लिये कोई सांचा नहीं बनाया इस कांस्य मूर्तिशिल्प श्रृंखला की हर कलाकृति सिर्फ एक ही बन सकती थी, उसके और रूप नहीं ढाले जा सकते थे। सभी मूर्तिशिल्प आकार में छोटे हैं। अपने विनम्र साधनों में वे छोटे–छोटे मूर्तिशिल्प ही बनाते रहे हैं पर आज कला विशेषज्ञ सोमनाथ होर को एक बड़ा मूर्तिशिल्पी मानने लगे हैं।[8] उनके सभी मूर्तिशिल्पों में मदर एण्ड चाइल्ड एक बड़े आकार का मूर्तिशिल्प था जो शान्तिनिकेतन से चोरी हो जाने के बाद कभी मिला ही नहीं। उन्होंने फैमिली, कुत्ता भी प्रसिद्ध मूर्तिशिल्प बनाये यदि हम उनकी मूर्तियों का अध

ययन करते हैं तब हम पाते हैं कि वे भी बहुत आकृतिपरक ना होकर अमूर्तन की ओर ही झुकी हुई प्रतीत होती है, उनमें न वाल्यूम था, न मास, न वेट मैंने उन्हें सिर्फ जख्म ही कहा रचना सामग्री को देखते हुए वे जख्म ही तो थे।[9] उन्होंने बंगाल के लोक गीत बाउल के गायक को भी अपनी कला में स्थान दिया।

बाउल गायक (कांस्य)

पेवमेंट डाग (कांस्य)

सोमनाथ होर की सभी कलाकृतियों में सर्वाधिक प्रसिद्धि उनके पेपर पल्प शिल्प वुन्ड्स को ही मिली। उन्होंने आजीवन कार्य किया उनकी रचनाओं में मिथुन, सफेद पर सफेद, फुटपाथ पर सो रहा बच्चा, तेभागा डायरी पर आधारित वुडकट, माँ बच्चा, पीठ, भूख, चीख आदि प्रमुख हैं।

माँ और बच्चा (वुडकट)

सोमनाथ होर की कला में वैविध्य है, प्रयोग है, तकनीक है, शिल्प कुशलता है। उनके हर प्रयास का उद्देश्य त्रासदी पीड़ा और भय का प्रकटीकरण है जिसकी अभिव्यंजना में वे सदैव सफल ही रहे हैं।

कला का भावनात्मक पक्ष – सोमनाथ होर एक भावुक कलाकार रहे हैं, उनकी कला का उद्देश्य जनमानस के ह्रदय तक पहुँचता था वो जितने कलाकार थे उतने ही एक सी पी आदि के कार्यकर्ता थे और वहीं से उनकी कला का आरंभ हुआ था, समाजवादी विचारधारा उनके अन्दर गहराई से व्याप्त थी, भूख, गरीबी, अकाल, कष्ट, भारत पाकिस्तान युद्ध की त्रासदी (1970) और वियतनाम युद्ध (1955–75) से उत्पन्न परिस्थितियों और वेदनाओं की अनुभूति को सोमनाथ ने कलाभिव्यक्ति द्वारा अनुहित किया। सोमनाथ के शब्दों

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i02.027

में ''मैं तस्वीरें नहीं बनाता हूँ मैं जख्म बनाता हूँ''।[10] आपकी कला में रोमांस के लिये कोई जगह नहीं रही। होर ने स्वयं को कला जगत की चमक–दमक से दूर रखा परन्तु अपने विषय चयन में उन्होंने दुख को चुना और उसके साथ आजीवन प्रतिबद्ध रहे। मानवीय पीड़ा के साथ उनका जो संबंध बना वह उनकी कला में आरंभ से अंत तक परिलक्षित होता है। उनकी दृष्टि में कला कोई केवल मनोरंजन का साधन नहीं है वरन् वह मानवीय पीड़ा को समाज तक पहुँचाने का माध्यम है, वे भले ही एकांतप्रिय शोर शराबे से दूर रहने वाले कलाकार थे परन्तु फिर भी वो विचार से कट्टर समाजवादी और आधुनिकतावादी थे। बंगाल के तेभागा आंदोलन के वंचित किसान का मर्म भी उनकी स्केच डायरी का हिस्सा बना। कलाकार का संवेदनशील होना इस बात का प्रमाण है कि सोमनाथ होर ने जब तथाकथित इरॉटिक कला में भी दिलचस्पी दिखाई तो संभोगरत युगल एक अद्वितीय ऊर्जा को प्रेक्षक के सामने लाते हैं। अकाल और विभाजन की स्मृतियों से बुरी तरह आंदोलित कलाकार ने जब सत्तर के दशक में जल इरौटिक एचिंग बनाई तो उनमें भी मनुष्य की पाशविकता और जंगलीपन मुखर था। जिस प्रकार ईश्वर की प्रकृति का अन्त नहीं है, उसी प्रकार मनुष्य की कला का छोर नहीं है, ईश्वर की प्रकृति कल्पना के परे ही है और यही कल्पना मनुष्य की कला की सीढ़ी है। सोमनाथ होर की कल्पना में प्राकृतिक सौन्दर्य न होकर आपदा थी जिस दुर्भिष ने जाने कितनी जानें ले ली थीं उनका हृदय उन्हीं से द्रवित रहा और कल्पना में भी वही अवसाद गहराया रहा। जीवन में आनन्द हर व्यक्ति का व्यक्तिगत होता है, कलाकार के रुप में सोमनाथ होर ने मन को आंदोलित करने वाले विषय ही आजीवन चुने उनकी कला में युद्ध के विनाशकारी प्रभावों को दर्शाया, उन्हें मानव की दुर्दशा को कला में ढालने की महारत हासिल थी इसीलिये उनकी कला न केवल बंगाल में अपितु पूरे देश में सराही गई। उनके समकालीन कलाकार जहाँ विदेशी कला की चकाचौंध से आकर्षित हो रहे थे परन्तु वहीं उन्होंने बंगाल के एकांत व शान्तिपूर्ण वातावरण में अपनी कला का स्वरूप निखारा और उसको जन–जन तक पहुँचाया। आजीवन वे कला में नवीन अनुसंधान कर अनेकों प्रविधियाँ अपनाते रहे, उनके सृजन में भयावयता, वीभत्सता तथा मानव के संताप और कष्टों का भावनात्मक पक्ष ही सामने आता है। समाज के शोषित वर्ग को शायद ही किसी कलाकार ने इतनी संवेदनशीलता और वास्तविकता के साथ अंकित किया होगा जितना कि सोमनाथ होर ने किया है वो और उनकी कला सौ फीसदी सिर्फ और सिर्फ समाज को समर्पित रही। उनकी कलायात्रा में पीड़ा का स्थान सर्वोपरि रहा। समकालीन कला के प्रसिद्ध कला इतिहासकार, समीक्षक आर0 शिवकुमार ने उनके विषय में लिखा कि सोमनाथ होर की वास्तविक दृष्टि में हिंसा और पीड़ा, करुणा और अकेलापन अवभाज्य रुप से जुड़े हुए हैं।[11] जिन घटनाओं ने उनको मर्मान्त तक कष्ट दिया वही उनकी कला में मुखर रहा और सदा वो एक ही प्रकार की कला का सृजन करते रहे उनकी कला में विचार भी पीड़ा है और प्रभाव भी पीड़ा ही है। जिस प्रकार से फ्रायड के विचार में ''कला हमारी दमित भावनाओं की अभिव्यक्ति करती है।'' यह बात होर की कलाकृतियों में शतप्रतिशत रूप से सिद्ध होती है यूँ तो समय के साथ घाव भर जाते हैं परन्तु कलाकार की संवेदनशीलता ने उन्हें कभी भरने नहीं दिया। कला का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं हो सकता यह बात उनकी आजीवन कलायात्रा में सत्य सिद्ध हुई उनकी कला में भी एक मिशनरी फोकस है। दुखः भोग पीड़ा की अनेक लाउड तस्वीरें तारों की तरह हमारे सिर से निकल जाती हैं। पर सोमनाथ की कला की पीड़ा घातक है। वह धीरे–धीरे हमारे बीच अपनी जगह बनाती हैं। हम सोचना शुरु कर देते हैं जिस दुनिया को हम देखते हैं वह कैसी है? और अपने हाथों से हम अपना चेहरा छुपा लेते हैं और हमें महसूस होता है कि हड्डियाँ माँस से थोड़ा ही नीचे हैं।[12] सोमनाथ होर की कला का संप्रेक्षण जबरदस्त है वह दर्शक के अंतस

को झकझोरने में सदैव खरी उतरती है। उनकी कला कला के लिये ना होकर मानव के उस रूप को प्रदर्शित करने के लिये है जिसमें वह पाशविकता की हर सीमा को पार कर सकता है और वहीं दूसरी ओर मानव ही उस असहनीय कष्ट पीड़ा का भोगी बनता है और उसको सहन करता है अपने अस्तित्व को मिलाकर। कला का सृजन ही भावनाओं के उद्‌गार स्वरूप होता है और वही भाव दर्शक को विचलित द्रवित कर दे वहीं पर कलाकार की सफलता दृष्टिगोचर होता है। चालीस के दशक में बंगाल के दुर्भिक्ष और द्वितीय विश्वयुद्ध के वातावरण में कोलकाता के कुछ युवा कलाकारों ने जिंदगी की तीखी और कड़वी सच्चाईयों से जुड़ने के लिये बंगाल स्कूल की कोमल मृदु देवी देवताओं से आतंकित कल्पनाशक्ति को अपने लिये बेकार पाया। बहरहाल नये कलाकारों को लगा कि बंगाल स्कूल के देवी देवता समाज की नई सच्चाई को नहीं बता पायेंगे।[13] सोमनाथ होर भी इसी विचारधारा के पक्षधर बने उनकी कला का मूल आत्मिक था इसी कारण वह कभी लोकलुभावन सौन्दर्य के प्रति कभी आकृष्ट नहीं हुए, उनकी कला पीड़ा और संताप के इर्दगिर्द ही घूमती रही और न ही कभी किसी सीमा में बंधी उन्होंने अपने आसपास जो देखा वही अपनी कला में अभिव्यक्त किया।

होर कलाकार बनने से पूर्व एक एक्टिविस्ट थे जिसके कारण उनकी कला भी समसामयिक जनमानस के दुखों के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया के रूप में ही उभरी, जिसमें शैलीगत गुण तथा सौन्दर्य को महत्व न देकर सिर्फ भावाभिव्यंजना को ही प्रमुखता प्रदान की गई, स्वयं होर के अनुसार मेरा सर्वप्रथम रेखाचित्र द्वितीय विश्वयुद्ध में बम से प्रभावित एक शिकार का था। जिसमें एक 12 या 13 वर्ष की लड़की की आंतें बाहर निकली पड़ी हैं और उनके शरीर के अंग इधर–उधर बिखरे पड़े हैं।[14] होर की कला अपने समकालीन कलाकारों से सर्वथा भिन्न है उन्होंने तत्कालीन समाजिक व्यथा को ही रचा और ऐसे भावनात्मक पक्ष को प्रस्तुत किया जिसने मानव मन को झकझोर कर रख दिया। आज भी दीर्घा में खड़े दर्शक उनकी रचनाओं को देखकर भाव विह्‌वल हो जाते हैं।

पुरस्कार एवं सम्मान –सोमनाथ होर एक ऐसे कलाकर थे जिन्होंने सदैव अपनी आत्मिक आवाज को सुना और कार्य किया। उन्होंने कला की साधना की ओर किसी भी प्रकार का लोभ–प्रलोभन नहीं रखा परन्तु उनकी कला की श्रेष्ठता ने उन्हें समय–2 पर पुरस्कार और सम्मान प्राप्त कराये उन्हें 1960 में अपना पहला राष्ट्रीय पुरस्कार ललित कला अकादमी, दिल्ली द्वारा दिया गया। उसके पश्चात् 1962 में उनकी रंगीन एचिंग बर्थ ऑफ ए व्हाइट रोज पर भी उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। 1963 उनके प्रिंट क्षेत्र में भी ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया। शांति निकेतन बहुत लंबे समय तक उनकी कार्यस्थली रहा वहाँ से 1984 में उन्हें प्रोफेसर एमेरिटस की उपाधि दी गई।

भारत सरकार ने उन्हें कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिये 2007 का 'पद्‌मभूषण' पुरस्कार प्रदान किया। उनको प्राप्त सभी सम्मान एवं पुरस्कार उनकी कला के प्रति अगाध श्रद्धा व उनके कठिन परिश्रम का ही परिणाम है।

निष्कर्ष –भारतीय छापा कलाकारों में सोमनाथ होर का नाम सदैव श्रद्धा और सम्मान से लिया जाता रहेगा, उनका निश्छल स्वभाव जिसमें समानुभूति का भाव उनकी अन्तर्आत्मा तक समाया हुआ था। उनकी हर कला विधा में मानवीय पीड़ा और दुखः का ही अंकन सर्वप्रमुख रहा, यही कारण है वुन्ड्स या घाव उनकी सर्वाधिक चर्चित लोकप्रिय श्रृंखला बनी, अपने समकालीन कलाकारों की भांति उन्होंने न तो विदेश गमन चुना और ना ही कला को बाजार के लिये सृजित किया, यदि कलासृजन किया तो सिर्फ और सिर्फ पीड़ितों के प्रति अपनी संवेदना और सहानुभूति प्रकट करने के उद्‌देश्य से।

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i02.027

उनके जीवन की कलायात्रा में उनकी पत्नी रेबा होर का सदैव सहयोग और साथ रहा, वे अपने जीवन के अंतिम समय में बहुत बीमार रहे और 2006 में अपनी अन्तिम श्वांस लेकर अनन्त की यात्रा पर निकल गये। भारतीय कला एवं कलाकार ऐसे सन्त प्रवृत्ति कलाकार के प्रति सदैव श्रद्धावनत् रहेंगे।

सन्दर्भ

1. संस्कृति और कला, रामगोपाल विजयवर्गीय, कलादीर्घा, अप्रैल 2001, पृ0 सं0–12
2. कला समय और समाज : युद्ध, अकाल और चित्रकला, अशोक भौमिक, कलादीर्घा, अंक 28, वर्ष 2014
3. कला शिक्षा तथा जनरूचि, शिवनारायण रे, समकालीन कला, अंक 2
4. सोमनाथ होर, विनोद भारद्वाज, वृहद आधुनिक कला कोष, पृ0 सं0–128
5. Somnath Hore, Amrita Jhaveri, A Guide to 101 Modern & Contemporary, Indian Artists, Pg. 38
6. Somnath Hore, Amrita Jhaveri, A Guide to 101 Modern & Contemporary, Indian Artists, Pg. 38.
7. भारतीय छापा चित्रकला आदि से आधुनिक काल तक, डॉ0 सुनील कुमार, पृ0 सं0–76 एवं 78
8. सोमनाथ होर, विनोद भारद्वाज, वृहद आधुनिक कला कोष, पृ0 सं0–126
9. सोमनाथ होर, विनोद भारद्वाज, वृहद आधुनिक कला कोष, पृ0 सं0–127
10. वही, पृ0 सं0–128
11. सोमनाथ होर, एक एकांतप्रिय समाजवादी और एक उत्साही आर शिवकुमार, निबंध, पुस्तक सोमनाथ होर
12. 1986 में लेडीज स्टडी ग्रुप द्वारा आयोजित प्रदर्शनी 'विमंस' के कैटलॉग से उदधृत
13. सोमनाथ होर, विनोद भारद्वाज, वृहद आधुनिक कलाकोष की भूमिका
14. Contemporary Graphics in India, Kali Biswas, Contemporary 18, Pg. 42.